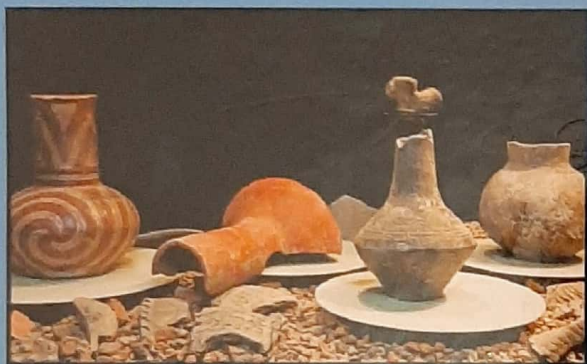


भारतीय लोक संस्कृति और पुरातत्त्व

INDIAN FOLK CULTURE AND ARCHAEOLOGY



Set of 2 Volumes

सम्पादक
रामकुमार अहिरवार



भारतीय लोक संस्कृति और पुरातत्त्व

INDIAN FOLK CULTURE AND ARCHAEOLOGY

भाग-II

सम्पादक

रामकुमार अहिरवार

विभागाध्यक्ष

प्राचीन भारतीय इतिहास,
संस्कृति एवं पुरातत्त्व अध्ययनशाला
विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.)



B.R. Publishing Corporation

Delhi - 110 052

57. भील जनजीवन और लोक संस्कृति-पर्व और मेले श्रीमती आरती बाजपेयी	355
58. भिलाला जनजाति में लोक विश्वास रमेश चौहान	367
59. अवध के विविध-लोक देवी-देवता राजकुमार वर्मा	373
60. बुन्देलखण्ड के लोक देवता रिंकु सिंह	379
61. बुन्देली लोक संगीत में प्रतिबिम्बित लोक जीवन सुधा सोनी	399
62. बुन्देलखण्ड की लोकनृत्य परम्परा में राई जरीना जॉन चौधरी	407
63. होल्कर युगीन छतरियों में लोक स्थापत्य का प्रभाव सोहन कुमार शर्मा	417
64. बुन्देलखण्ड में त्यौहारों की परंपरा रश्मि झारिया	427
65. बुन्देलखण्ड की लोक संस्कृति में धूमिचित्र नरेश कुमार पाठक	435
66. लोक जनमानस पर महाराज छत्रसाल बुन्देला का प्रभाव रिंकु सिंह	439
67. निमाड़ अंचल की तंत्र-मंत्र संबंधी लोक गाथाएँ रमेश चौहान एवं श्रीमती कंचन कन्नौज	449
68. पश्चिमी निमाड़ की संस्कृति में लोकपर्व की भूमिका मोहन निमोले एवं प्रमिला बघेल	455
69. छत्तीसगढ़ के प्रमुख लोकनृत्य-एक अध्ययन पंकज सिंह	461
70. लोक संस्कृति में लोक एवं लोक कला विश्वजीत सिंह परमार	469
71. लोक पर्व बस्तर दशहरा ज्योति मेहता	475
72. लोक नृत्य, लोकनाट्य एवं पुरातत्त्व (म.प्र. के विशेष संदर्भ में) शाहीन खान	479

छत्तीसगढ़ के प्रमुख लोकनृत्य-एक अध्ययन

पंकज सिंह

छत्तीसगढ़ का विस्तृत भूखण्ड अतीत काल से महाकान्तार दण्डकारण्य, कौशल, दक्षिण कौशल आदि विविध नामों से इतिहास में अपने अस्तित्व को प्रमाणित करता रहा है। "धान का कटोरा" की संज्ञा से अभिहित किए जाने वाले इस अंचल की चेतना विकासोन्मुखी रही है। आर्य और अनार्य संस्कृतियों का संगम स्थल होने के कारण छत्तीसगढ़ की ऐतिहासिक गरिमा में अभिवृद्धि होती रही है।¹ छत्तीसगढ़ के निवासी कृषक, ग्रामीण-शिल्प, संस्कारों, लोक-कला, लोक-संगीत, लोक-नृत्य तथा धर्म की रक्षा करने वाले होते हैं। यहाँ का लोक साहित्य अत्यन्त समृद्ध एवं जीवन्त है। वे वैदेशिक-कला, जीवन-प्रणाली, साहित्य, संगीत और विज्ञान के घातक प्रभावों से अपने को असंपृक्त रखे हुए हैं।² छत्तीसगढ़ की आत्मा गाँवों में बसती है। गाँव का व्यक्ति भले ही निरक्षर क्यों न हों, किन्तु वह सुसंस्कृत होता है। छत्तीसगढ़ के समाज, संस्कृति में सरलता, शीतलता और स्वच्छता का समावेश है। इसके अंतर्गत व्याप्त परम्पराएं, पर्व-त्यौहार, लोक विश्वास, नृत्य, गीत, धर्म साधना, शुभाशुभ दैव कार्य, सभी समाहित हैं, लोक संस्कृति की सहस्रों वर्षों की अनुभूतियाँ यहाँ सुरक्षित हैं।

मानव का यह सहज स्वभाव है कि वह सुख व दुख को भी सहचरों में बाँटना चाहता है और यह उसकी प्रकृति संस्कृति परिस्थिति परिवेश के अनुरूप भिन्न-भिन्न शैलियों में प्रकट होती है, जिसका एक माध्यम लोकनृत्य है। लोकनृत्यों की रचना में किसी व्यक्ति विशेष की छाप नहीं होती, बल्कि सारे समाज के व्यक्तित्व की